Impact Factor 3.025

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

UGC Approved Monthly Journal

VOL-IV ISSUE-VIII Aug. 2017

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

सामाजिक एवं सांस्कृतिक संचेतना का वाहक - मीडिया

डॉ.प्रशान्त कुमार
व्याख्याता–व्यावसायिक प्रशासन
राजकीय लोहिया महाविद्यालय
चूरू (राजस्थान)

प्रस्तुत शोध आलेख के माध्यम से मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों को प्रस्तुत करने का लघु प्रयास किया गया है। मीडिया का हमारे जीवन पर इतना व्यापक प्रभाव है कि यदि यहाँ यह लिखा जाये कि मीडिया के बिना आज के इस संचार युग में हमारा जीवन कई मायनों में अधुरा है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। मीडिया एवं समाज के संबंध एक दुसरे के पूरक है। समाज में सांस्कृतिक परिवर्तन मीडिया के माध्यम से परिलक्षित होते है। सुदृढ़ एवं प्रभावित करने वाले संदेश मीडिया के माध्यम से ही पुरुषों, महिलाओं एवं बच्चों को प्रभावित करने में सक्षम होते है। संदेशो की विषयवस्तु के साथ–साथ संदेशो के वितरण पर भी ध्यान देना आवश्यक है। संदेशों का प्रभावशाली वितरण करने से उनकी उपयोगिता बढ़ जाती है। संदेशों को पहूँचाने के लिए विभिन्न माध्यमों जैसे टेलीविजन, रेडियों, इंटरनेट एवं प्रिंटमीडिया का प्रयोग किया जाता है। मीडिया वह सशक्त माध्यम है जिससे विस्तृत स्तर पर मानव के दैनिक जीवन, उसकी आदतों एवं व्यवहार को परिवर्तित किया जा सकता है।

आलेख का उद्देश्य :– प्रस्तुत आलेख के उद्देश्य निम्न है–

1. मीडिया के प्रभावों का विश्लेषण करना।
2. मीडिया की वर्तमान समय में उपादेयता सिद्द करना।
3. मीडिया एवं समाज के संबंधों को स्पष्ट करना।
4. मीडिया की भूमिका में परिवर्तन लाना।
5. मीडिया की जवाबदेहिता को प्रकट करना।

संदेशों को पहूँचाने के लिए विभिन्न माध्यमों जैसे टेलीविजन, रेडियों, इंटरनेट एवं प्रिंटमीडिया का प्रयोग किया जाता है। मीडिया वह सशक्त माध्यम है जिससे विस्तृत स्तर पर मानव के दैनिक जीवन, उसकी आदतों एवं व्यवहार को परिवर्तित किया जा सकता है। यद्यपि टेलिवीजन के माध्यम से जिन कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है उनकी विषयवस्तु एवं कार्यक्रमों के प्रसारण के समय पर नियंत्रण है किन्तु आज के सबसे व्यापक माध्यम इन्टरनेट ने समाज के समक्ष सब कुछ प्रकट कर दिया है। परम्परागत मीडिया एवं आधुनिक मीडिया में यह एक बड़ा अन्तर बनकर उभरा है। इस अन्तर के कारण सामान्य जनता की सामाजिक सहभागिता में भी आश्चर्यजनक परिवर्तन दृष्टिगत हुए है। इन्टरनेट ने आज फेसबुक, टवीट्र ब्लॉग्स के माध्यम से राजनैतिक विचारों, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विचारों एवं प्रतिक्रिया प्रदर्शित करनें का अवसर एवं स्थान जनसामान्य को उपलब्ध करा दिया है। परिणामस्वरुप सरकारें, सरकारी अधिकारी/कर्मचारी ज्यादा जवाबदेही के दायरे में आ गये है। मीडिया के इस नये स्वरुप ने जनमानस के विचारों, विचारों के प्रस्तुतीकरण में मानसिक क्रांति उत्पन्न कर दी है।मीडिया की अवधारणा हमारे देश में ऐतिहासिक कालीन नृत्य–नाटिकाओं के माध्यम से विकसित हुई है। नृत्य–नाटिकाओं ने सांस्कृतिक संदेशों का आवश्यकतानुसार विभिन्न क्षेत्रों में वितरण किया है।

आजकल के मीडिया (मास–मीडिया) की अवधारणा पश्चिम की संस्कृति का दर्शन कराती है। मीडिया के माध्यम से विभिन्न समसामयिक विषयों का विश्लेषण किया जाता है। आज मनुष्य के व्यापक हितों की सुरक्षा मीडिया के माध्यम से संभव हो रही है। न्यायपालिका का ध्यान आकर्षित करने में भी मीडिया ने महत्वपुर्ण भूमिका अदा की है। वास्तव में इलेक्ट्रोनिक मीडिया व प्रिन्ट मीडिया के आधार अलग–अलग है। जहॉ तक जनता के साथ जुड़ाव की बात है,इलेक्ट्रोनिक मीडिया की तुलना में प्रिन्ट – मीडिया भारत की संस्कृति से ज्यादा जुड़ा हुआ है। आज हमारे समाज में होने वाले व्यापक परिवर्तनों से समाज में संवेदन हीनता बढ़ती जा रही है। महिला अत्याचार,आर्थिक अपराधों ने व्यक्तिगत ईमानदारी को हाशिये पर पहूँचा दिया है। मीडिया अगर समसामयिक मुद्दो के प्रति आवाज नहीं उठाता है,तो देश में न्याय को प्रतिष्ठित करने में बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। हमारी सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के लिए भी मीडिया को सक्रिय भुमिका अदा करना आवश्यक है। मीडिया जनता और सरकार के बीच बना सेतु है जनता की सरकार तक और सरकार की नीतियॉ जनता तक मीडिया पहुॅचाता है। आज के इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने हमारी जिन्दगी के सारे आयाम ही बदल दिये है। फेसबुक,ट्वीटर,वाट्सएप जैसे इलेक्ट्रोनिक माध्यमों ने कई बार छोटी सी बात को बतंगड़ बनाने में भी सहयोग दिया है। मीडिया के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक समृद्वि को संरक्षित किया जा सकता है। समय – समय पर आयोजित होने वाले सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों के माध्यम से निकली शोधपूर्णजानकारी भी मीडिया के द्वारा साझा की जा सकती है।

आम जनता रेडियों, टेलीविजन, समाचार पत्रों एवं इन्टरनेट के माध्यम से सुचनाऍ प्राप्त करती है। हम मीडिया द्वारा दी गई सूचनाओं पर विश्वास करते है, इसलिए मीडिया को जनता के समक्ष समाचार प्रस्तुत करते समय सावधानीपूर्वक कार्य करना चाहिये। मीडिया को महत्वपूर्ण समाचारों,घटनाओं को समाज के समक्ष प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करना चाहिये। कई बार मीडिया के माध्यम से प्रस्तुत किये गये समाचार जनभावनाओं के प्रतिकूल होने के कारण सामाजिक ताना बाना बिगड़ने का भय उत्पन्न हो जाता है। अतः मीडिया से जुड़े हुए व्यक्तियों को पूर्वाग्रह के बिना समाचारों का प्रस्तुतिकरण करना चाहिये। आज के समय मीडिया को सीखने का एक सशक्त माध्यम माना जाने लगा है। सम्पूर्ण विश्व से जुड़ने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि मीडिया को सशक्त बनाया जावें। परम्परागत मीडिया सूचनाओं का संवाहक था किन्तु आज मीडिया सामाजिक एवं सांस्कृतिक संचेतना का वाहक बन कर उभरा है। मीडिया की दृश्य एवं श्रव्य प्रस्तुति से वैचारिक क्रांति का सूत्रपात हो चुका है। यह एक शुभ संकेत है कि हम अपने आस पास घटने वाली घटनाओं एवं सामाजिक परिवर्तनों के प्रति जागरुक हो गये है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में मीडिया के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन हुए है। टेलीग्राफ से प्रारंभ हुआ यह दौर आज फेसबुक और व्हॉटसएप्प के माध्यम से त्वरित हो चला है। रेडियों के आविष्कार एवं प्रचलन से पूर्व समाचारपत्र एवं पत्रिकायें ही संदेशों को व्यक्त करने का माध्यम थी। टेलीविजन ने रेडियों के प्रचलन को कम कर दिया और जनमानस को संदेशों के दृश्य स्वरुप से जोड़ दिया। इन्टरनेट का जब जन्म हुआ तो इसके विस्तृत सामाजिक परिवर्तन के स्त्रोत की कल्पना नहीं की गई थी। आज न केवल युवाओं बल्कि प्रौढ वर्ग के मध्य इन्टरनेट अपनी उपयोगिता एवं विविधता के कारण अत्यन्त लोकप्रिय हो गया है। मीडिया में आमजन की रुचि एवं उसके लिए उपयोगी समाचार सम्मिलित किये जाते है। इसमे राजनीतिक घटनायें, खेल, नगरीय/स्थानीय समाचार, राष्ट्रिय एवं अंतर्राष्ट्रिय घटनायें, व्यापार, शिक्षा, मनोरंजन, साहित्य, एवं स्वास्थ्य संबंधी खोज आदि को समाहित किया जाता है। मीडिया के माध्यम से वे समाचार प्रस्तुत किये जाने चाहिये जिनसे विभिन्न आयु–वर्ग एवं स्तर के पुरूषों, महिलाओं, बच्चों की आवश्यकताओं को संतुष्ट किया जा सकें। मीडिया का हमारे पारिवारिक जीवन यथा बच्चों की परवरिश पर भी व्यापक प्रभाव पड़ता है। अभिभावकों को बच्चों की परवरिश के समय उन्हे मीडिया के दुष्प्रभावों से बचाना चाहिए।अभिभावकों को बच्चों की जीवनचर्या में समाहित

होकर मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों के उदाहरण देते हुए उन्हे इसके सदुपयोग की शिक्षा देनी चाहिऐ। मीडिया अच्छा प्रभाव भी उत्पन्न करता है, यह हमारे लिए अत्यन्त उपयोगी है। विभिन्न शोधकार्यों से यह परिणाम प्राप्त हुए है कि 6 वर्ष से कम आयु के बच्चें औसतन 2 घंटे प्रतिदिन टेलिविजन अथवा वीडियों और डी.वी.डी के साथ अपना समय व्यतीत करते है। इसी प्रकार 8 वर्ष से 18 वर्ष के मध्य आयु वर्ग वाले औसतन 4 घंटे टी.वी कम्प्युटर और वीडियों गेम्स खेलने में अपना समय व्यतीत करते है। लम्बे समय तक और दैनिक रुप से इस प्रकार टी. वी, कम्प्युटर स्क्रीन पर कार्य करना स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त हानिप्रद है।

मीडिया के सकारात्मक प्रभाव :–

1. मीडिया के माध्यम से नवीनतम समाचार हमें दिन प्रतिदिन प्राप्त होते रहते है। इनसे हमारे दैनिक जीवन को परिष्कृत करने एवं विविध आयाम स्थापित करने में सहायता मिलती है।
2. मीडिया के द्वारा आम जनता में सूचनाओं का आदान प्रदान होता है। ये सूचनायें ज्ञान का स्त्रोत भी है साथ ही विभिन्न सम सामयिक विषयों पर ध्यानाकर्षण के लिए महत्वपुर्ण है।
3. मीडिया के माध्यम से व्यक्ति में निहित प्रतिभा को बाहर लाकर समग्र समाज के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है। बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण एवं उनमें अच्छी आदतों को विकसित करने में भी मीडिया एक सशक्त माध्यम है।
4. समाचार पत्रों को नियमित रुप से पढने से बच्चों में न केवल पढने की आदत विकसित की जा सकती है बल्कि इससे उनकी शब्दावली भी सुदृढ होती है। नये नये शब्दों को सीख कर भाषा को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है।
5. टी. वी चैनलों पर विभिन्न लोकप्रिय हस्तियों के कार्यक्रमों से, रोमांचक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले चैनलों(डिस्कवरी, नेशनल ज्यॉग्राफिक आदि) प्रश्नोंतरी के कार्यक्रमों से न केवल ज्ञानवर्ध्दन होता हैबल्कि व्यक्तित्व निर्माण में भी यह सहायक है।
6. कार्टून चैनल्स भी बच्चों को प्रसन्नता,उल्लास एवं आहलादित हास्य के अवसर प्रदान करते है।
7. वीडियों गेम्स के प्रस्तुतीकरण से तार्किक क्षमता का विकास होता है। इससे दृष्टिकोण,विचार एवं व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन उत्पन्न होते है।
8. मीडिया के माध्यम से सामाजिक सरोकारों, संवेदनशील विषयों पर एकजुटता एवं जनभागीदारी को प्रोत्साहित किया जाता है जिससे सामाजिक परिष्कार होता है।
9. मीडिया के विभिन्न माध्यमों से भाषायी विविधता को समझने में सहायता मिलती है।
10. विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों से सामाजिक सहिष्णुता, खेल भावना, व्यापारिक समझ का विकास होता है।

मीडिया के नकारात्मक प्रभावः–

सकारात्मक परिवर्तनों के साथ–साथ मीडिया ने हमारे जीवन को विपरीत रुप से भी प्रभावित किया है। सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रदुषण के लिए एक सीमा तक मीडिया को भी कठघरे में खड़ा किया जा सकता है। प्रस्तुत आलेख में कुछ उदाहरणों के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

1. टी.वी. चैनल्स, कम्प्युटर, इंटरनेट आदि पर औसतन चार घंटे से अधिक समय व्यतीत करने वाले बच्चों/युवाओं में शारीरिक एवं मानसिक बीमारियां बढ रही है।

2. अश्लील एवं हिंसक गतिविधियॉ तथा खतरनाक मानव जीवन को जोखिम में डालने वाले कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण से जनसामान्य के व्यवहार में असामान्य परिवर्तन एवं दुर्घटनायें दृष्टिगत हुई है।
3. शराब, धुम्रपान एवं अन्य नशीलें पदार्थों के सेवन एवं इन्हे सामाजिक उच्च स्तर के प्रतिमान प्रदर्शित करने वाले कार्यक्रमों से सामाजिक संरचना मे आमूलचूल परिवर्तन देखने को मिल रहे है।
4. मीडिया के अत्यधिक दिखावें एवं प्रदर्शन से शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें भी तीव्र गति से बढ रही है। तनाव,हताशा के कारण कई बार आत्मघाती अथवा अपराध की और कदम बढने लगते है।
5. समाचार पत्रों मे अत्यधिक संवेदनशील समाचारों,चित्रों से मानव मस्तिष्क संतुलन खोने की घटनायें भी देखने, पढने एवं सुनने को मिल रही है।
6. फैशन शो, नृत्य कार्यक्रम, संगीत कार्यक्रमों के प्रदर्शन के कारण समाज में धन का अपव्यय भी बढ रहा है। युवावर्ग में येन केन प्रकारेण अत्यधिक धन कमाने की तीव्र लालसा ने अपराधों की पृष्ठभूमि उत्पन्न कर दी है।
7. यह भी देखने में आया है कि निम्न एवं मध्यवर्ग की आकांक्षायें बढने से उनमें श्रेष्ठ एवं उच्च सामाजिक स्तर प्राप्त करने की इच्छा बलवती हुई है किन्तु इसकी प्राप्ति के लिए लघुमार्ग के चयन की दुविधा ने उन्हे मानसिक रुप से परेशान कर दिया है।

निष्कर्षः–

मीडिया समाज के नैतिक मुल्यों के संरक्षण में,सामाजिक सरोकारों की पूर्ति में तथा बाहरी विश्व के साथ तादात्मय स्थापित करने में महत्वपुर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकता है। मीडिया के द्वारा क्या प्रस्तुत किया जाता है ? कब किया जाता है ? लक्षित समूह कौन है ? यह मायने रखता है। बच्चों एवं युवाओं को सिनेमाई एवं काल्पनिक जीवन से बाहर निकाल कर यथार्थ का अहसास करवाना अत्यन्त महत्वपुर्ण है। मीडिया के माध्यम से आज सम्पूर्ण विश्व निकट आ गया है, दूरियॉ घट गई है। हमें इसके सकारात्मक पक्ष को देखना समझना एवं विकसित करना होगा। मीडिया एवं समाज को मिलकर इसके नकारात्मक प्रभावों को दुर करने के सम्बन्ध में चिंतन एवं मनन करना परम् आवश्यक है। मानव जीवन में संतुलन स्थापित करने के लिए यह कोशिश मीडिया एवं समाज द्वारा निरन्तर रूप से जारी रहनी चाहिये।

संदर्भः–

१. मधुसूदन शर्मा – आर्थिक चिन्तन का इतिहास
२. प्रो. बी.एस शर्मा (2007) गांधी दर्शन के विविध आयाम राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
३. प्रकाश नारायण : समाज कल्याण के नूतन आयाम, बुक एनक्लेव जयपुर
४. बी.पी.वर्मा : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन,आगरा प्रकाशन,आगरा।
५. के. दामोदरन : भारतीय चिन्तन परम्परा, नेशनल पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली।
६. आचार्य राममूर्ति : शिक्षा, संस्कृति और समाज
७. आधुनिक भारतीय समाज : डॉ. पुरुषोतम शर्मा
८. राम आहुजा : भारतीय मीडिया एवं समाज
९. राजस्थान पत्रिका के विभिन्न संस्करण
१०. दैनिक भास्कर के विभिन्न संस्करण